



BHARAT BHAVAN  
INTERNATIONAL  
BIENNIAL  
OF PRINTS,  
Feb. 1989

अपना ही ईश्वरदूषित चेहरा ?

माँ,

लौटकर जब आऊँगा

क्या लाऊँगा ?

मेरी माँ के लिये मैं क्या कहूँगा ? मेरे पास कुछ नहीं है ।  
मेरा लौटना न लौटना उसके लिये वर्षों पहले ही स्वप्न  
हो चुका था । मैं लौटूँगा तो कलें ? माँ कलें है ? वो है  
मेरे सामने किन्तु उसके सामने मैं नहीं हूँ । मैं दूँगा हूँ प्यार  
माँ का । मगर वह कलें है ? मैं शायद जिंदगी भर दूँगा ही  
दूँगा यह मेरी नियति है । मेरी माँ को मैंने हर गहर दूँगा है  
जहाँ भी प्यार मिला । मैं तो मेरी माँ का प्यार दूँ रहा हूँ  
जहाँ भी मिला । इसमें प्यार तो कम मिला । दुःख अधिक मिला ।  
और मैंने जाना है कि मली दुःख मुझे प्यार के विस्तार में मिला  
रहा है । शायद माँ ने बचपन में ही माँ के प्यार के बारे में ठीक  
मही बताना चाहा है । समझ का फेर है और मुझे मणी कौल की  
फिल्म नज़र का एक संवाद याद आ रहा है " वगैरह, मेरी समझ नहीं है । "

इस कविता में जो भी भाव है उस तक पहुँच पाना  
तो मेरे लिये मेरी माँ को पा लेना है किन्तु इसी 'पा' लेने 'चाहना'  
में यह चित्त एक कोशिश है । माँ को पाने हर कोशिश जिस तरह  
नाकाम होती है उसी तरह यह चित्त भी है । मैं इस तरह के  
हर प्रयास में हर बार में असफल होता हूँ और चित्त खण्ड  
जारी है । इसलिये मैं चित्तों में 'उधार' लेना चाहता हूँ ।  
क्या मातृम या शायद बाद में मातृम ले यह सस्ता उधार जाता ही नहीं ।

आपको मैं यह स्वतः न जानने क्यों लिख रहा हूँ। या शायद माँ को खोना रहा हूँ। आप इसे अव्यथा न लें। इस पूरे संसार में मेरे चित्तों में त्रितनी रुचि आपने ली है किसी ने नहीं ली। जिस तल्लीनता जिस गंभीरता से आप देखते हैं मुझे लगता है कि आप जानना चाहते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ? मैंने पहले भी लिखा है फिर से लिख रहा हूँ मेरे चित्तों के द्वारा आपने मुझे जाना यह मेरे लिखे सबसे बड़ी उपलब्धि है इसके पहले किसी ने इतने ध्यान से जानने की चेष्टा ही नहीं की थी। इसलिए मैं सब लिखने की गुरुर की।

इस वक़्त रात के दो बजे रहे हैं और पिछले डेढ़ घंटे से से मैं लगातार आपको लिख रहा हूँ। क्यों? इस प्रश्न की मैं कोई जगह नहीं है। यह आप समझते हैं।

यह पत्र मही समाप्त करता हूँ पता नहीं कब तक लिखता चला जाऊँ।

आपका

— 11.11.11 —  
4-3-91.